प्रमाण की प्रामाण्यता और उसकी ज्ञप्ति

ज्ञान में सत्य का निर्णय कैसे होता है? (न्याय दीपिका 1.19-21 के आधार पर)

NotebookLM

ज्ञान होना और सत्य को प्रमाणित करना दो अलग बातें हैं

प्रमाण

सम्यक् ज्ञान। विषय को जानना।
(उदा: मैंने सामने एक वस्तु देखी।)

प्रामाण्य

प्रमाण में 'सच्चापना' या 'निर्दोषपना'।
(उदा: मैंने जो देखा है, वह बिल्कुल सत्य है, उसमें कोई भ्रम नहीं है।)

वस्तुएँ कभी गलत नहीं होतीं; हमारा ज्ञान और निर्णय भ्रमित हो सकता है।

NotebookLM

ज्ञान से आचरण तक की यात्रा: तीन अनिवार्य चरण

1. उत्पत्ति

ज्ञान और उसके सत्य अंश का उत्पन्न होना। (कारण: इन्द्रियों की निर्मलता और बाह्य साधन)।

2. ज्ञप्ति

ज्ञान के सत्य होने का निर्णय होना। (हमारा मुख्य विषय)।

3. प्रवृत्ति

सत्य के निर्णय के बाद वस्तु के प्रति निःशंक आचरण करना।

NotebookLM

सत्य का निर्णय (ज्ञप्ति) कैसे होता है? दो मुख्य मार्ग

स्वतः ज्ञप्ति

ज्ञान के उत्पन्न होते ही, उसी समय (समकाल में), बिना किसी अन्य कारण के सत्य का निर्णय हो जाना। (ज्ञान ज्ञापकात् एव)

परतः ज्ञप्ति

ज्ञान होने के बाद, कालांतर (अन्य समय) में, बाहरी कारणों और प्रमाणों की सहायता से सत्य का निर्णय होना।

NotebookLM

प्रामाण्य की ज्ञप्ति: विभिन्न दार्शनिक दृष्टिकोण

दर्शन	ज्ञप्ति की मान्यता
मीमांसक	सर्वथा स्वतः (ज्ञान हमेशा स्वयं प्रमाणित होता है)
सांख्य	स्वतः (प्रमाण और अप्रमाण दोनों स्वतः होते हैं)
नैयायिक / बौद्ध	सर्वथा परतः (ज्ञान हमेशा बाहरी साधनों से प्रमाणित होता है)
जैन (स्याद्वाद)	**कथंचित स्वतः, कथंचित परतः** (अपेक्षाकृत - वस्तु की स्थिति के अनुसार दोनों सही हैं)

NotebookLM

जैन दृष्टिकोण: ज्ञप्ति का आधार ‘विषय’ की प्रकृति है

विषय
(ज्ञेय पदार्थ)

अभ्यस्त विषय

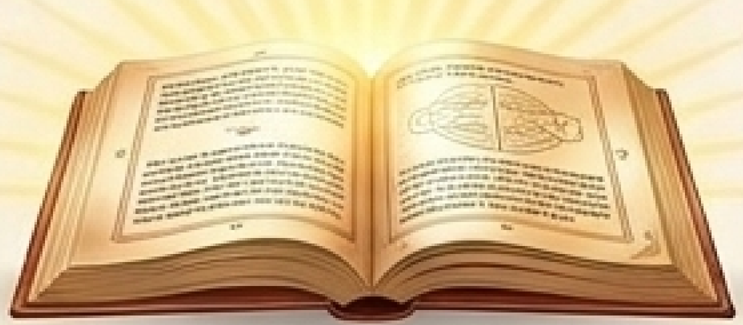

ज्ञप्ति स्वतः होती है (तत्काल निर्णय)।

अनभ्यस्त विषय

ज्ञप्ति परतः होती है (प्रमाणों द्वारा निर्णय)।

ज्ञान का विषय ज्ञाता के लिए **नया** है या परिचित,
इसी से ज्ञप्ति का मार्ग तय होता है।

NotebookLM

अभ्यस्त विषय: जहाँ सत्य का निर्णय स्वतः होता है

परिभाषा

वह विषय जिससे हम भली-भांति परिचित हैं और जिसका हमने अनेक बार अनुभव किया है।

प्रक्रिया

यहाँ ज्ञान होते ही, बिना किसी संशय के तुरंत सत्य का निर्णय हो जाता है।

विशेषता

इस ज्ञप्ति में 'अन्य काल' (Extra time) या 'अन्य कारण' (External proof) की कोई आवश्यकता नहीं होती।

NotebookLM

दृष्टांतः स्वग्राम तड़ाग जल (अपने गाँव का तालाब)

स्थिति
आप रोज़ अपने गाँव के तालाब के पास से गुज़रते हैं।

ज्ञान
दूर से देखते ही ज्ञान हुआ - यह जल है।

ज्ञप्ति
आपको तुरंत 100% विश्वास हो जाता है। आपको पानी को छूकर या पीकर जाँचने की आवश्यकता नहीं है।

निष्कर्ष
यहाँ परिचित विषय होने के कारण सत्य का निर्णय स्वतः हो गया।

NotebookLM

अनभ्यस्त विषयः जहाँ सत्य का निर्णय परतः होता है

परिभाषा

वह विषय जो ज्ञाता के लिए बिल्कुल नया है, अपरिचित है, या जहाँ स्थिति स्पष्ट नहीं है।

प्रक्रिया

ज्ञान होने के बाद भी सत्य का निर्णय तुरंत नहीं होता। निर्णय किसी 'अन्य कारण' और 'कालांतर' (अन्य समय) में होता है।

विशेषता

यहाँ ज्ञान के उत्पन्न होने पर सर्वप्रथम 'संशय' उत्पन्न होता है।

NotebookLM

दृष्टांत: जल है या मरीचिका? (संशय की स्थिति)

स्थिति

आप किसी नए, अपरिचित मार्ग या रेगिस्तान से गुज़र रहे हैं।

ज्ञान

दूर चमकती सतह देखकर ज्ञान हुआ - वहाँ जल है।

संशय

क्या यह सचमुच जल है?
या केवल मृग-मरीचिका है?

निष्कर्ष

ज्ञान (मुझे जल का ज्ञान हुआ है) तो हो गया,
लेकिन सत्य का निर्णय (ज्ञप्ति) अभी अटका हुआ है।

NotebookLM

परतः ज्ञप्ति कैसे कार्य करती है? (संशय से समाधान)

1. कमलों की सुगंध: हवा में कमलों की महक का आना।

3. लोगों की प्रवृत्ति: राहगीरों का वहाँ से मटकी भरकर आना।

सत्य का निश्चय (वास्तविक जल)

2. शीतल वायु: वहाँ से आने वाली हवा का ठंडा होना।

निर्णय: इन 'अन्य कारणों' से यह सिद्ध हुआ कि पूर्व में देखा गया जल वास्तव में सत्य है। (यह परतः ज्ञप्ति है)।

NotebookLM

समन्वयनः ज्ञान और ज्ञप्ति का विकास चक्र

NotebookLM

ज्ञप्ति का फल: निःशंक प्रवृत्ति

ज्ञान

ज्ञप्ति

प्रवृत्ति

निर्णय की पहचान

ज्ञप्ति (सत्य के निर्णय) का सबसे बड़ा प्रमाण यह है कि ज्ञाता तुरंत क्रिया (प्रवृत्ति) में लग जाता है।

दृष्टांत

जब जल का पक्का निर्णय हो जाता है, तो व्यक्ति निःशंक होकर पानी पीने या मटकी भरने के लिए प्रवृत्त होता है।

सिद्धांत

यदि आचरण (चारित्र/प्रवृत्ति) में शंका या रुकावट है, तो इसका अर्थ है कि अभी 'ज्ञप्ति' (सत्य का निश्चय) पूरी तरह नहीं हुई है।

NotebookLM

आध्यात्मिक अनुप्रयोग: स्व-संवेदन और आत्मानुभूति

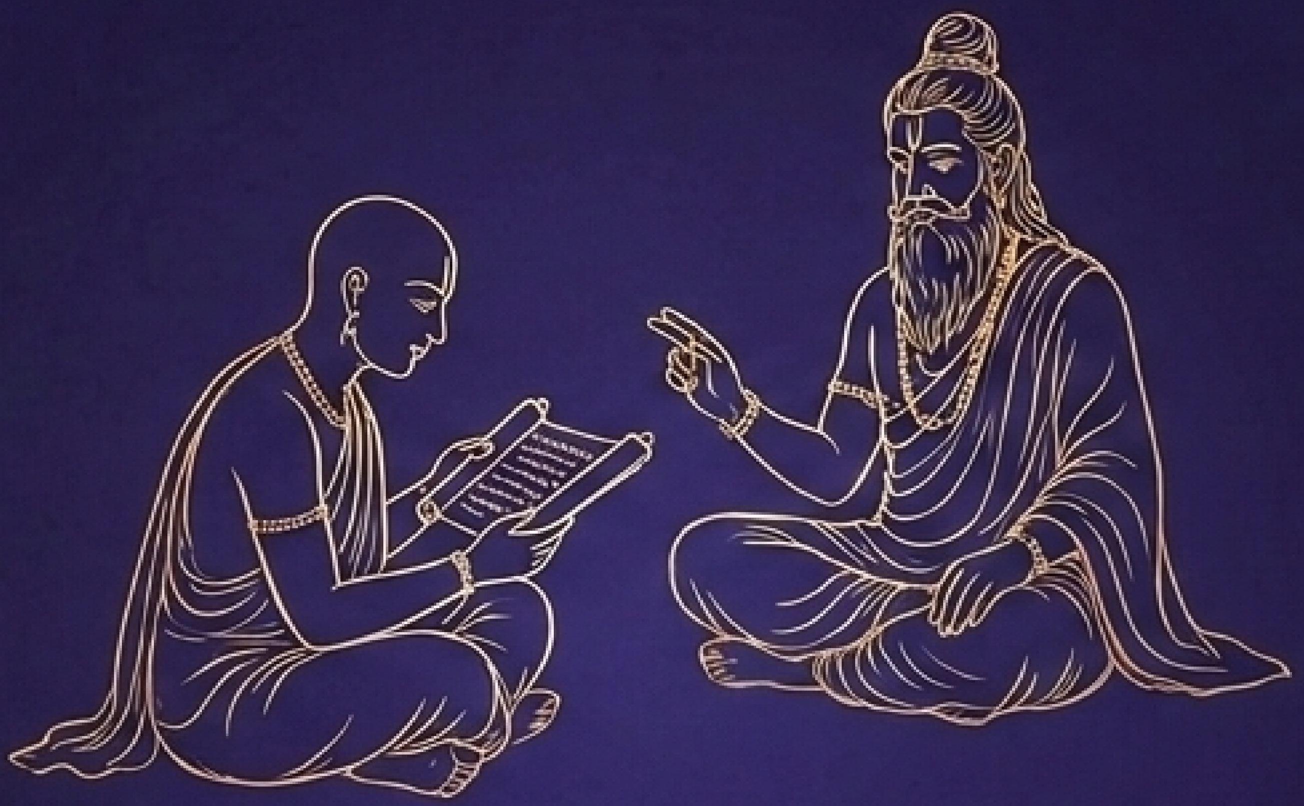

अनभ्यस्त अवस्था (शुरुआती साधक)

जब पहली बार आत्म-अनुभव होता है, तो गुरु या आगम से पूछकर (परतः) निर्णय करना पड़ता है कि क्या यही संवेदन सही है?

अभ्यस्त अवस्था (ज्ञानी/मुनिराज)

जब बार-बार स्व-संवेदन का अभ्यास हो जाता है, तो आत्मा का अनुभव होते ही तुरंत (स्वतः) उसकी सत्यता का भान हो जाता है?

NotebookLM

निष्कर्ष: स्पष्टता का दर्पण

1. वस्तुएँ कभी गलत नहीं होतीं; केवल हमारा ज्ञान और निर्णय भ्रमित हो सकता है।
2. प्रामाण्य की उत्पत्ति सदा परतः (इन्द्रियों की निर्मलता आदि) से होती है।
3. प्रामाण्य की ज्ञप्ति अभ्यस्त विषय में स्वतः और अनभ्यस्त विषय में परतः होती है।
4. **सत्य का निर्दोष निर्णय (ज्ञप्ति) ही जीव को निःशंक प्रवृत्ति और मोक्ष मार्ग की ओर ले जाता है।**

NotebookLM